Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ कजरी तीज व्रतीकथा ॥

॥ जय कजरी माता ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ कजरी तीज की लोककथा ॥

यह ब्राह्मण दंपति और सत्तू की प्रचलित लोककथा का सरल हिंदी रूपांतरण है। अलग क्षेत्रों में कथा के पात्र, मात्रा और समापन में अंतर मिलता है।

किसी गाँव में एक निर्धन ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। दोनों थोड़े साधनों में भी एक-दूसरे का साथ देते थे। भाद्रपद कृष्ण तृतीया को कजरी तीज आई तो ब्राह्मणी ने श्रद्धा से व्रत रखा। घर में पूजा के लिए चने का सत्तू नहीं था। उसने पति से कहा कि यदि संभव हो तो थोड़ा सत्तू ले आएँ।

ब्राह्मण ने घर में खोजा, पड़ोस में पूछा, पर उसे तत्काल सत्तू नहीं मिला। पत्नी की इच्छा पूरी न कर पाने से वह दुःखी था। रात को वह एक साहूकार की दुकान के पास पहुँचा। वहाँ चने की दाल, घी और शक्कर देखकर उसने बिना अनुमति कुछ सामग्री ली और सत्तू बनाने लगा।

खटपट सुनकर दुकान के सेवक जाग गए। उन्होंने ब्राह्मण को रोक लिया और साहूकार को बुलाया। साहूकार ने पूछा कि वह रात में दुकान में क्यों आया है। ब्राह्मण ने अपनी गरीबी और पत्नी के व्रत की बात सच-सच बताई। उसने यह भी स्वीकार किया कि बिना पूछे सामान लेना उसकी भूल थी।

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ साहूकार की उदारता और कथा का भाव ॥

ब्राह्मण की बात सुनकर साहूकार ने जाँच की। उसके पास सत्तू के अतिरिक्त कोई वस्तु नहीं थी। साहूकार ने समझा कि वह कठिन परिस्थिति में है। उसने उसे डाँटने के बजाय सहायता करने का निर्णय लिया और कहा कि ब्राह्मणी को वह अपनी धर्म-बहन मानेगा।

साहूकार ने अपनी इच्छा से सत्तू, मेहंदी और कुछ आवश्यक वस्तुएँ ब्राह्मण को दीं। ब्राह्मण ने कृतज्ञ होकर अपनी भूल के लिए क्षमा माँगी और घर लौट आया। ब्राह्मणी ने पूजा के लिए सत्तू पाया तो उसे बहुत संतोष हुआ। दोनों ने श्रद्धा से तीज माता को प्रणाम किया और सहायता के लिए साहूकार का आभार माना।

लोककथा के अंत में कहा जाता है कि उस परिवार की कठिनाइयाँ धीरे-धीरे कम हुईं और वे सुख से रहने लगे। परिवार में दया, सच्चाई और बाँटकर सहयोग करने का भाव बढ़ा। भक्त कथा सुनकर अपने घर और सबके जीवन में मंगल की कामना करते हैं।

कथा से मिलने वाली सीख

इस कथा में सत्तू का महत्व और साहूकार की उदारता दिखाई गई है। बिना अनुमति किसी का सामान लेना उचित नहीं; पूजा के लिए भी गलत साधन नहीं अपनाने चाहिए। सामग्री न मिल सके तो अपनी सामर्थ्य के अनुसार सादगी से पूजा करें और सहायता माँगने में संकोच न करें।

॥ कजरी माता सबका मंगल करें ॥